



# SLS Newsletter

(e-newsletter of The Society of Life Sciences)

Volume - 2

Number 1 & 2

Year - 2005-2006

**T**he e-news letter published by the Society of Life Sciences. Through this official publication, the activities of society and achievements of its members are highlighted. For research paper/review, the Society of Life Sciences publishes a regular Peer Reviewed Biannual Journals.....*National Journal of Life Sciences and Life Science Bulletin.*

**GWALIOR**  
March - 2005  
**KHANDWA**  
July - 2005  
**BHOPAL**  
Dec. - 2005, Nov. - 2006  
**SATNA**  
Dec. - 2005



# ANNUAL

## Report of Society of Life Sciences (Events & Activities)

**SLS**  
**YOUNG**  
**SCIENTIST**  
Awards- 2005-2006

**Must Read** Traditional  
**Medicines**  
**NUTRITION**

Pg-9  
No.-9



Popular Article By  
**Dr. AWADHESH  
KUMAR  
SHRIVASTAVA**



**Dr. Rashmi Singh**  
Editor-in-Chief

**Dr. V.S. Singh, Dr. D.N. Saksena, Dr. Neel Prabha Kolhe**  
Executive Editors of this Edition

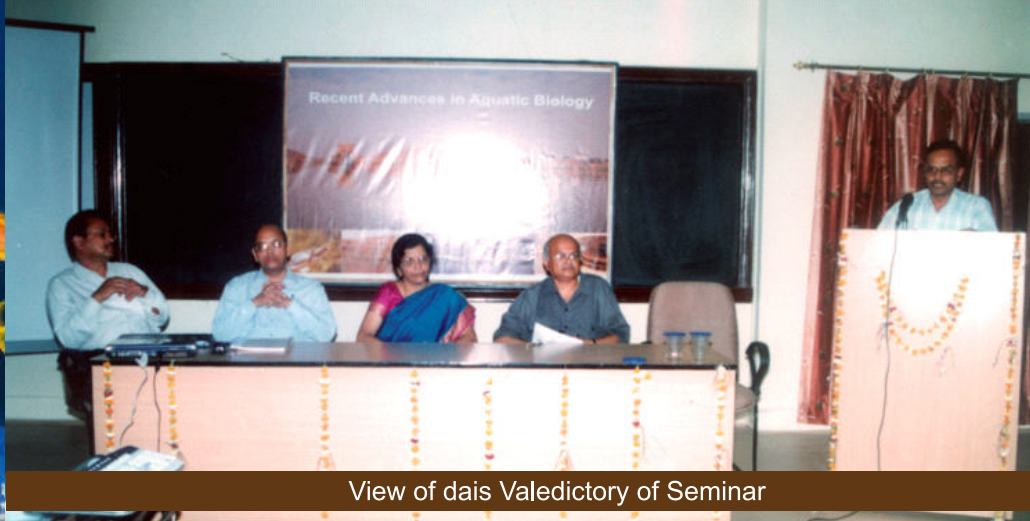
**Dr. Pragya Khanna**  
Managing Editor



The Society of Life Sciences, Satna (M.P.) awarded a citation and a cash award to the young research scholar for encouraging their presentations in National Seminar on **Recent Advances in Aquatic Biology** organized by **School of Studies in Zoology, Jiwaji University, Gwalior (M. P.)** on 15th - 16th March 2005. The Chief guest of inaugural function was Prof. T. Ramakrishana Rao, Former Director, Centre for Environment, Delhi University and Prof. Satya Prakash, Vice Chancellor, Jiwaji University, Gwalior presided over the function. The Seminar was organized successfully by Prof. D. N. Saksena, Director and Dr. R.J. Rao, Organizing secretary of the National Seminar.

National Seminar on

## Seminar in Gwalior Recent Advances in AQUATIC biology



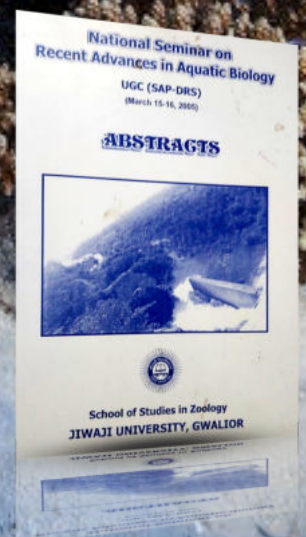
View of dais Valedictory of Seminar



**Mr. JAVED G. KHAN PATHAN**  
Dept. of Zoology,  
M.J. Phule Nagpur University  
Nagpur (M.S.)



**Mr. RAVI KUMAR SINGH**  
Dept. of Zoology  
Dayalbagh Educational Institute,  
Agra (U.P.)

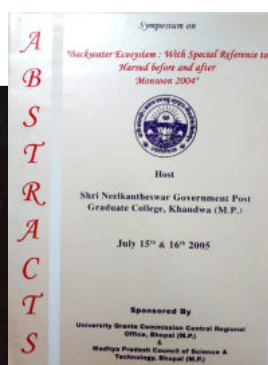




## National Symposium

The Society of Life Sciences, Satna (M.P.) awarded a citation and a cash award to the young research scholar for encouraging their presentations in National Symposium on "Backwater ecosystems with special reference to Harsud before and after monsoon 2004" organized by Dept. of Zoology, S. N. Govt. P. G. College, Khandwa on 15th - 16th July 2005. The Chief Guest of the inaugural function was Smt. Archana Chitnis, Minister, Govt. of M.P. Bhopal and Shri Hukumchand Yadav M. L.A. Khandwa presided over function. In valedictory function the Chief Guest was Dr. Y. D. Pendharkar, Principal Holkar Science College, Indore. The Symposium was organized successfully by Dr. Neelprabha Kolhe, Fellow of the Society of Life Sciences and Organizing secretary, whereas Dr. S. P. Singh, Satna whole heartily managed the technical sessions under the supervision of Principal Dr. M.A.N Abbasi.

# Backwater Ecosystem



View of dias Valedictory of National Symposium

## SLS YOUNG SCIENTIST Award- 2005



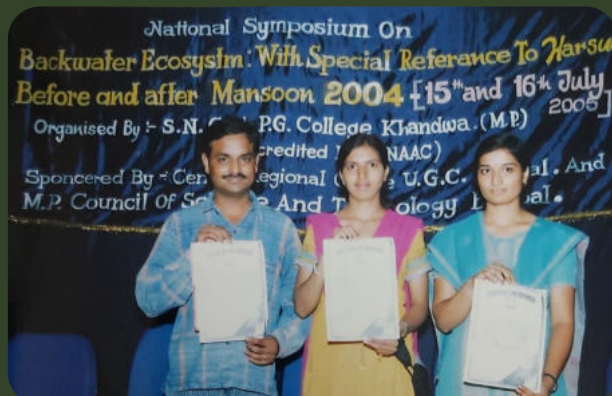
Gajendra Singh Tomar  
(Agra)



Shalini Sharma  
(Khandwa)



Ekta Laad  
(Khandwa)



Gajendra Singh Tomar  
(Agra)

Shalini Sharma  
(Khandwa)

Ekta Laad  
(Khandwa)



## 2<sup>nd</sup> M.P. Science Congress

Bhopal Chapter - 2005

The Young Scientist award of The Society of Life Sciences, Satna (M.P.) were given to Dr. Mugdha Tiwari, (Delhi) and Mr. Manimay Bhattacharya (Bhopal) for best paper presentation oral and poster respectively in M.P. Science Congress 2005 organized by Career College, Govindpura, BHEL, Bhopal (M.P.) on 17th - 18th December 2005. The Chief guest of the inaugural function was Dr. B. S. Dwarkanath, National Institute of Nuclear Medicine and Applied Sciences, Ministry of Defence India and Dr. A. Subbarao, Director, National Institute of Soil Sciences, Govt. of India presided over the function. Chief guest of the valedictory function was Mr. Babulal Gaur, Ex. Chief Minister, Govt. of M.P.

The Congress was organized successfully by Dr. S. K. Kulshrestha, Convenor of M.P. Science Congress and Dr. V. S. Singh, Principal of the Career College, Bhopal (M.P.)

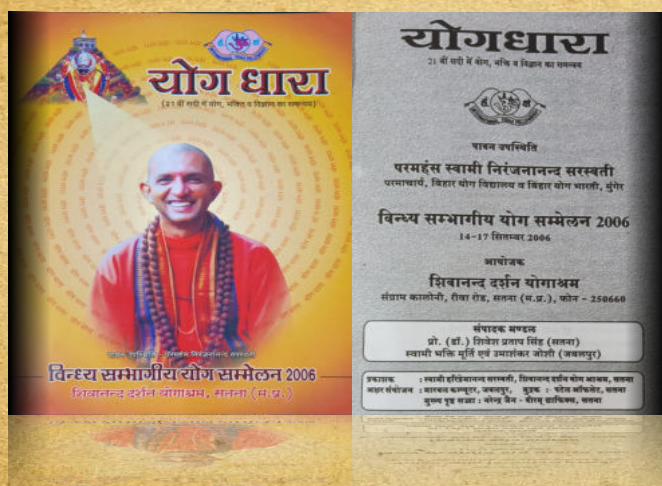
### SLS Award for Best Paper Presentation



**Dr. Mugdha Tiwari**  
(Delhi)  
(Oral Presentation)



**Manimay Bhattacharya**  
(Bhopal)  
(Poster Presentation)



### Unveiling Ceremony

Vindhya Sambhagiya Yoga Sammelan organised by "Shivanand Darshan Yogashram, Satna (M.P.)" on 14th-17th Sept. 2006.

In this occasion "YOG DHARA" Patrika relised by "Paramhans Swami Niranjnanand Saraswati, Bihar Yoga Vidhyalay, Munger (Bihar).

YOG DHARA edited by Dr. Shivesh Pratap Singh (Satna) and Shri Uma Shankar Joshi (Jabalpur).



## Workshop on

# Experimental BIOLOGY

A workshop for science teachers on "Experimental Biology" was jointly organised by the Society of Life Sciences and Science Communication Cell of the National Academy of Sciences, India Allahabad at Rajiv Gandhi College, Satna from Dec. 24th-25th 2005. This workshop was inaugurated by Dr. R. L. Sharma, Principal Govt. P. G. College, Satna (M.P.). The valedictory function was held on 25th Dec. 2005. The Chief Guest was Prof. Gyanendra Singh (Vice-Chancellor, Mahatma Gandhi Gramodaya Vishwavidyalaya, Chitrakoot), Prof. C. B. L. Srivastava, F.N.A.Sc. (Ex. Prof. and Head Dept. of Zoology, Allahabad University, Allahabad U.P.) presided in the valedictory function. Prof. U. C. Srivastava F.N.A.Sc. (Eminent Zoologist) and Dr. Niraj Kumar (Asst. Executive Secretary, The National Academy of Sciences, India) were the guests of honour.



From L to R : Dr. Shivesh Pratap Singh, Shri B. P. Soni Dr. Gyanendra Singh (V.C.), Prof. C. B. L. Srivastava, Prof. U. C. Srivastava and Dr. Niraj Kumar.







## Glimpses of Workshop on Experimental Biology

24-25 December 2005



**‘एक वरदान है बायोटेक्नालॉजी’**

सतना, 25 दिसम्बर. आज का समय तकनीकी ह्रास का युग है, ऐसे में प्रत्येक मनुष्य को तकनीकी ह्रास से परिचित होना चाहिए। विज्ञान संसार आधुनिकता का उपयोग करके तकनीकी ह्रास को खोजने का प्रयास कर रहा है। तकनीकी ह्रास को लोकप्रिय बनाना आज का सबसे बड़ा चुनौतीपूर्ण आविष्कार युग में वरदान साबित हो रही है।

‘चमत्कारी’ से भरे अविष्कारों ने मानव जीवन को सुखमय बना दिया है। विकास का यह ज्ञान अब अनेक आधुनिक युगों के समस्त विज्ञान के लिए उपयोगी है। उनके अनुसार मानव, गोभी, आम्रफण, विज्ञान, चिकित्सा के कुलपति प्रो. ज्ञानेश्वर सिंह ने राजीव गांधी कॉलेज में आयोजित दो दिवसीय प्रयोगात्मक जीव विज्ञान कार्यशाला के समापन अवसर पर व्यक्त किया। कुलपति ने नगर एवं आसपास के क्षेत्रों से आये शिक्षक एवं छात्रों को सम्बोधित करते हुए कहा कि जीवन का यह विज्ञान मुहूर्त, तीन तथ्यों पर आधारित है। जीव को उत्पत्ति कैसे हुई? यह किस प्रकार जीवित रहता है? और जीवों के लिए प्रयोग क्या करता है? इन तीनों तथ्यों के आधार पर वैज्ञानिक प्रयोग - नए अनुसंधान में संलग्न हैं। आज जो विज्ञान प्रयोगों को वैज्ञानिक बनाने की आवश्यकता है, उसे देने का प्रयास है। सिंह ने कहा कि शिक्षण संस्थानों को अपने में मिल जुल कर ज्ञान को फैलाना चाहिए। ज्ञान संस्थानों के आपसी सम्बन्ध का लाभ सभी लोग प्राप्त कर सकें, इसके लिए उन्होंने बायोटेक्नालॉजी, जैविक प्रयोगों के प्रयोग पर भी इलाहाबाद विश्वविद्यालय के अज्ञेय चरण शर्मा, एन.बी. श्रीवास्तव ने काफी आश्चर्य व्यक्त किया और कहा कि विज्ञान शब्द ज्ञान देता है किन्तु उसका उपयोग व्यक्ति का समाज किस प्रकार करता है? इस पर विचारनी आवश्यक है। डॉ. यु.सी. श्रीवास्तव तकनीकी ह्रास के दौरान एंटी आक्सिडेंट और प्रोडिक्मलस पर विस्तृत चर्चा करते हुए उपाध्यक्ष शिक्षकों को प्रयोग करने भी दिखाए।

**जीव विज्ञान पर दो दिनी वर्कशाप आज से**

सतना, 23 दिसम्बर • राष्ट्रीय विज्ञान अकादमी के सहयोग से यहाँ रोवा रोड स्थित राजीव गांधी कॉलेज में 24 दिसम्बर से जीव विज्ञान विषय पर दो दिनी कार्यशाला प्रारम्भ होगी। शिक्षकों एवं विद्यार्थियों के लिए आयोजित कार्यशाला का औपचारिक उद्घाटन शासकीय स्वशासी महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ. आर.एल. शर्मा करेंगे। जबकि अध्यक्षता कन्या महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ. के.बी. एल. श्रीवास्तव द्वारा की जायेगी। कार्यशाला के संयोजक डॉ. शिवेश प्रताप सिंह एवं अक्वेषा प्रताप सिंह विश्वविद्यालय से सम्बद्ध राजीव गांधी कॉलेज के प्राचार्य अतुल सोनी ने साझा तौर पर बताया कि उद्घाटन से पूर्व 24 दिसम्बर को दोपहर 2 बजे से पंजीयन प्रारम्भ होगा। दोपहर 4 बजे से 4 बजे तक विषय विशेषज्ञों के उद्बोधन होंगे। इस बीच औपचारिक उद्घाटन होगा। दोपहर 4 बजे से शाम 5 बजे तक प्रयोगशाला में उपयुक्त उपकरणों की जानकारी दी जायेगी। उन्होंने बताया कि कार्यशाला के दूसरे और अन्तिम सत्र का शुभारम्भ 25 दिसम्बर को प्रातः साढ़े 9 बजे से होगा। इस अवसर पर नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ इम्यूनोलॉजी नई दिल्ली के डॉ. पी. सहाय विशेष आमीत विषय विशेषज्ञ अपने विचार व्यक्त करेंगे। इससे पूर्व प्रातः 9 बजे से पंजीयन प्रारम्भ हो जायेगा। दूसरे सत्र के शुरुआती अवसर पर इलाहाबाद विश्वविद्यालय के प्रो. (डॉ.) यु.सी. श्रीवास्तव का भी उद्बोधन होगा। प्रतिभागियों के लिए विषय विशेषज्ञों द्वारा प्रायोगिक कार्य का प्रदर्शन एवं प्रशिक्षण दोपहर 12 बजे से 2 बजे तक तथा राजीव गांधी कॉलेज की बायोटेक लैब का धर्मग और संबंधित उपकरणों की जानकारी दोपहर 2 बजे से 3 बजे तक प्रदान की जायेगी। प्रतिभागियों द्वारा स्वयं कार्य निष्पादन दोपहर 3 बजे से साढ़े 4 बजे तक होगा। समापन कार्यक्रम दोपहर साढ़े 4 बजे से लेकर साढ़े 5 बजे तक चलेगा। इस कार्यशाला में मैथर, नागौर, रामपुर बायकान, अमरापटन और अन्य इलाका सरकारी तथा गैर सरकारी स्तरों के संबंधित शिक्षक एवं शिक्षिकाएँ भी अपनी-अपनी भागीदारी दर्ज कराएंगे।

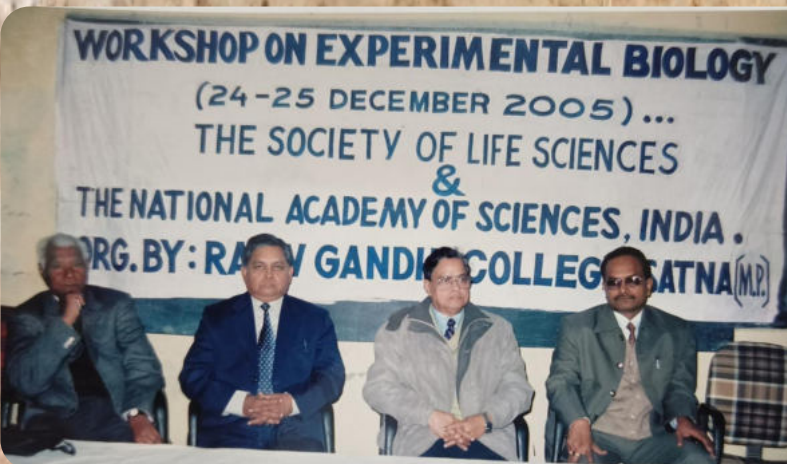






## Glimpses of Workshop on Experimental Biology

24-25 December 2005



### किताबी ज्ञान के साथ प्रायोगिक ज्ञान आवश्यक : शर्मा

जागरण प्रतिनिधि, सतना  
राष्ट्रीय विज्ञान अकादमी भारत में 75वीं वर्षगांठ के अवसर पर विज्ञान संसार कार्यक्रम के तहत आयोजित दो दिवसीय कार्यशाला का औपचारिक उद्घाटन स्वराजी महोदय द्वारा किया गया। अपने उद्बोधन में डॉ. शर्मा ने कहा कि किताबी ज्ञान के अलावा प्रायोगिक ज्ञान भी आवश्यक है, इस प्रकार की कार्यशाला के लिये आयोजक बधाई के पात्र हैं। कार्यक्रम की अध्यक्षता प्रचार्य डॉ. श्री.एस.श्रीवास्तव द्वारा की गई तथा कार्यक्रम का संचालन डॉ. सी.के.पाठक द्वारा किया गया। आमंत्रित वक्ताओं द्वारा बायो टेक्नालाजी के बारे में विस्तृत जानकारी देते हुए इसके व्यापक उपयोग के बारे में बतलाते रहे।



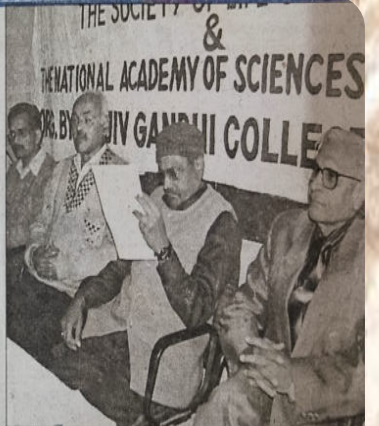
कहा गया है कि अब सूचना तकनीक के अतिरिक्त इसका अंतराष्ट्रीय स्तर पर विज्ञान के सभी क्षेत्रों में महत्व है। राजीव गांधी कॉलेज के डॉ. आर.पी.एस. धाकरे द्वारा अपने सारगर्भित उद्बोधन में

शिवेश प्रताप सिंह कार्यक्रम संयोजक द्वारा अतिथियों का स्वागत करते हुए भारत विज्ञान अकादमी इलाहाबाद द्वारा प्रायोजित पूरे कार्यक्रम की जानकारी स्वतंत्र रूप से जीव विज्ञान के छात्रों प्राध्यापकों एवं विभिन्न संस्थाओं से आये विज्ञान शिक्षकों को दी गई। कार्यक्रम में राजीव गांधी के प्राचार्य श्री पांडे तथा सभी प्राध्यापकों का सहयोग रहा। कार्यक्रम का आभार संस्था के डायरेक्टर अर्जुन कुमार सोनी द्वारा किया गया। 25 दिसम्बर को अब तक प्राप्त पंजीयन विज्ञान शिक्षकों का प्रातः नौ बजे से निःशुल्क व बायोटेक्नालाजी के बारे में इलाहाबाद विश्वविद्यालय के प्राध्यापक डॉ.सी.बी.एल. श्रीवास्तव का आभार प्रदर्शन होगा।

### किताबी ज्ञान के साथ प्रायोगिक ज्ञान भी आवश्यक : डॉ. शर्मा

सतना, 24 दिसम्बर, राष्ट्रीय विज्ञान अकादमी की 75वीं वर्षगांठ के अवसर पर विज्ञान संसार कार्यक्रम के तहत दो दिवसीय कार्यशाला का औपचारिक उद्घाटन स्वराजी महोदय द्वारा किया गया। डॉ. शर्मा ने कहा कि किताबी ज्ञान के अलावा प्रायोगिक ज्ञान भी आवश्यक है, इस प्रकार की कार्यशाला के लिये आयोजक बधाई के पात्र हैं। कार्यक्रम की अध्यक्षता प्रचार्य डॉ. श्री.एस.श्रीवास्तव द्वारा की गई तथा कार्यक्रम का संचालन डॉ. सी.के.पाठक ने किया। आमंत्रित वक्ताओं ने बायोटेक्नालाजी के बारे में विस्तृत जानकारी दी तथा इसके व्यापक उपयोग के बारे में बतलाते हुए कहा कि अब सूचना तकनीक के अतिरिक्त इसका अंतराष्ट्रीय स्तर पर विज्ञान के सभी क्षेत्रों में महत्व है, राजीव

गांधी कॉलेज के डॉ. आर.पी.एस. धाकरे ने कहा कि रोग प्रतिरोधक क्षमता वाले जीव एवं पौधों को बायोटेक्नालाजी की मदद से विकसित किया जा सकता है, उन्होंने बायोमैक्रो फिलर प्रोटीन के बारे में जानकारी दी कार्यक्रम के प्रांथ में डॉ. शिवेश प्रताप सिंह कार्यक्रम संयोजक ने अतिथियों का स्वागत करते हुए पूरे कार्यक्रम की जानकारी जीव विज्ञान के छात्रों, प्राध्यापकों एवं विभिन्न संस्थाओं से आए विज्ञान शिक्षकों को दी। कार्यक्रम में राजीव गांधी महाविद्यालय के प्राचार्य श्री पाण्डेय तथा प्राध्यापकों का सहयोग सरासरी रहा, आभार संस्था के डायरेक्टर अर्जुन कुमार सोनी ने व्यक्त किया। 25 दिसम्बर को विज्ञान शिक्षकों को प्रातः 9 बजे निःशुल्क पंजीयन व कार्यशाला किट का वितरण किया जाएगा एवं प्रातः 9:30 बजे से इलाहाबाद विश्वविद्यालय के प्राध्यापक डॉ. सी.बी.एल. श्रीवास्तव एवं डॉ. यू.सी. श्रीवास्तव का व्याख्यान होगा।



कार्यशाला में उपस्थित विज्ञान शिक्षकों के प्राचार्य डॉ. रामलाल शर्मा, हरिद्वार कल्याण महोदय के प्राचार्य डॉ. जी.पी.एस. श्रीवास्तव व डॉ. सी.के.पाठक

### प्रायोगिक जीव विज्ञान पर वर्क शॉप संपन्न - वरदान है बायोटेक्नालाजी - कुलपति

सतना, 25 दिसम्बर • महात्मा गांधी राष्ट्रीय विश्वविद्यालय के कुलपति और जाने-माने कृषि अभियंता श्री. ज्ञानेंद्र सिंह ने आज कहा कि बायोटेक्नालाजी आधुनिक युग में वरदान बन गई है। विकास का यहो क्रम अब अनेक असाध्य रोगों के समूल विनाश में मार्ग सिद्ध हो रहा है। सोसायटी ऑफ लैबोरेटरी के तत्वाधान में रायपुर अंतराष्ट्रीय प्रांतिक विधि-विज्ञान पर संसद राजीव गांधी कॉलेज में आयोजित दो दिनी प्रयोगात्मक जीव विज्ञान कार्यशाला के समापन रीक पर आज विज्ञान के शिक्षकों एवं विद्यार्थियों को सम्बोधित करते हुए डॉ. सिंह ने कहा कि जीवन का यह विज्ञान शास्त्र तीन तथ्यों पर केन्द्रित है। महलन- जीव की उत्पत्ति कैसे हुई? यह कैसे जीवित रहता है और जीने के लिए जीव क्या करता है? उन्होंने बताया कि इन तीनों तथ्यों को आधार बनाकर वैज्ञानिक नए-नए अनुसंधान में जुटे हुए हैं। आने



राजीव गांधी कॉलेज में वर्कशॉप।  
वेदर वरदान को जगज्ज जगह और मिल जुलकर ज्ञान को फैलाना चाहिए।  
कहा कि शैक्षणिक संस्थानों को परम्परा कुलपति डॉ. सिंह ने कीर्तित करके संपन्न किया।  
प्रत्युत्तर साईंस...  
महात्मा गांधी आयोग विधि-विज्ञान विभाग के कुलपति और जाने-माने कृषि अभियंता श्री. ज्ञानेंद्र सिंह ने राजीव गांधी कॉलेज की अत्याधुनिक बायोटेक लेब का भी अवलोकन किया। उन्होंने कॉलेज प्रबंधन के प्रयास की तारीफ की और विभिन्न डॉक्टरों ने लिखा- अधिव्य के विज्ञान (प्रत्युत्तर साईंस) के मददगार कॉलेज प्रबंधन का यह प्रयास सचमुच सराहनीय है।

जैसे तकनीक को भी अपनाए जाने पर जोर दिया। कार्यशाला के अगले दौर में इलाहाबाद विश्वविद्यालय के पूर्व विभागाध्यक्ष डॉ.सी.एस.जी. श्रीवास्तव ने कवचो अस्त्र सीला पर जोर दिया। उन्होंने इस तकनीक के दुष्प्रयोग की भी खोज निकाली। श्रीवास्तव ने कहा कि विज्ञान नुस्खे जान देता है। इसका उपयोग और दुष्प्रयोग उपयोग पर निर्भर करता है। तकनीकी संवे के दौरान अपने-पैटी आक्सीडेंट और की रेडियोसक्रिय पर स्वर्चाओं और इसके प्रयोगों की कठिनाई दिखाए। इस अवसर पर राष्ट्रीय विज्ञान अकादमी के सहसहस्र संयोजक नीलज कुमार ने अकादमी के उद्देश्यों को स्पष्ट किया। रीका रोड स्थित राजीव गांधी कॉलेज के संयोजक अनंत सोनी ने भी अपने विचार व्यक्त किए। श्री सोनी ने मुख्य अतिथि एवं आगंतुकों के प्रति आभार भी व्यक्त किया। कार्यक्रम का समापन राजीव गांधी कॉलेज के डायरेक्टर डॉ.पी. सी. के मुख्या अतिथि में सम्पन्न हुआ। इस मौके पर कार्यशाला के संयोजक डॉ. शिवेश प्रताप सिंह की उपस्थिति भी उल्लेखनीय रही।







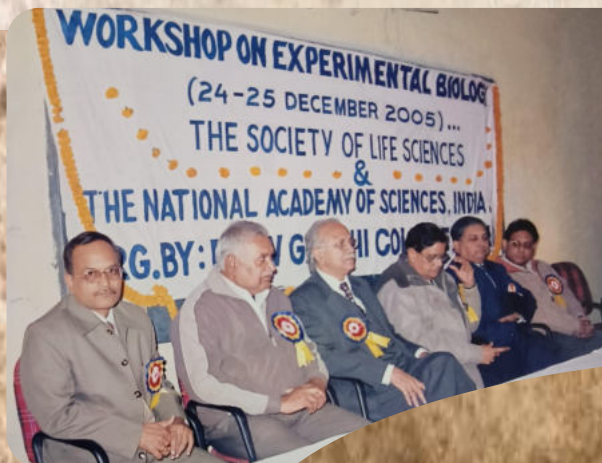
## Glimpses of Workshop on Experimental BIOLOGY

24-25 December 2005



Workshop on Experimental Biology was organised at Rajiv Gandhi College Satna on December 24-25, 2005. Prof. U.C. Srivastav was the Convenor and Dr. Shivesh Pratap Singh was the local organizer. Prof. C.B. L. Srivastav and Dr. Niraj Kumar addressed the participants of workshop whereas Prof. U.C. Srivastav demonstrated experiments on (i) Barr body testing (ii) Cytoplasmic organelles and Mitochondria-slide preparation and (iii) Fixing of live specimens of frog.

About 60 participating teachers from different schools of Satna, Rewa, Panna, Maihar and Nagod performed these experiments.



NASI  
Science Extension  
Lecture Programme  
Nov. 18, 2006

MGCGVV,  
Chitrakoot





## Awareness Programme Regarding Solidwaste Management



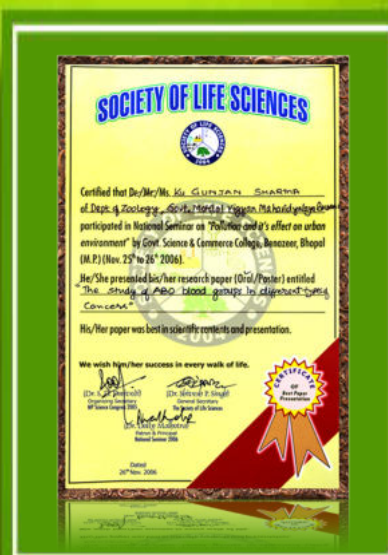
The National environmental awareness campaign was jointly organised by Govt. P. G. College, Satna and Society of Life Sciences from 10-04-06 to 24-06-06. For the year 2005-06 the theme Solid Waste Management was decided by Dept. of Environment and forests, Govt. of India. The campaign has been planned to organise popular lecture in different institutions of Satna town. Dr. Vinoy K. Shrivastava (Bhopal), Dr. B. S. Chandel (Kanpur), Dr. K. K. Dube (Jabalpur), Dr. V. S. Singh (Bhopal), Dr. R. K. Verma (Agra), Dr. Arun Dixit (Bilaspur), Dr. Rajesh Saxena (Bhopal) and Dr. P. D. Shrivastava, Dr. C. K. Pathak, Dr. R. P. S. Dhakarey, Dr. Neerja Khare, Dr. Rahul Diwedi and Dr. Rajeev Tiwari (Satna) delivered popular lectures on different topics related to solid waste management in Govt. P. G. College, Satna and other institutions of Satna town. The message of cleaning the environment and to get rid of solid waste was conveyed to the young generations. Speakers clearly emphasised that the solid waste can be classified into biodegradable and non-biodegradable wastes.





## National Seminar in BHOPAL 25-26 Nov. 2006

### YOUNG SCIENTIST Awards- 2006



The Society of Life Sciences, Satna (M.P.) awarded a citation and a cash award to the young research scholars for encouraging their presentations during the National Seminar "**Pollution and it's effect on urban environment**" organized by Govt. Science and Commerce College, Benazeer, Bhopal (M.P.) on 25th - 26th Nov. 2006. The Chief Guest of inaugural function was Prof. Kaptan Singh Solanki, State Mahamantri (Org.). Padam Shri Prof. Rajpal S. Sirohi, Vice Chancellor, Barkatullah University, Bhopal (M.P.), presided over the function. Dr. Radha Vallabh Sharma and Dr. U.C. Jain, Additional Director Higher Education were the Guests of honour. In the Valedictory function Shri S. N. Mishra, I.A.S. Commissioner, Higher Education (M.P.) was the Chief Guest and Dr. Shivesh Pratap Singh, Department of Zoology, Govt. P.G. College, Satna (M.P.) was the Special Guest.

The Seminar was successfully organized by Dr. Sudhanshu Dhar Dwivedi, Organizing secretary, Dr. Geeta Saxena, Convener and Dr. Dolly Malhotra, Principal who whole heartly manage this seminar.



**Ms. Ankita Tiwari**  
**Microfluids & MEMS Group RRL (CSIR)**  
**Bhopal**  
Presented her research paper (Poster) on  
"Development of Micrototal Analysis  
System"

**Ms. Gunjan Sharma**  
**Dept. of Zoology, Govt. Motilal**  
**Vigyan Mahavidyalay (Bhopal)**  
Presented her research paper (Oral) on  
"The study of ABO blood groups in  
different types of cancers."





## POPULAR ARTICLE



**Dr. AWADHESH KUMAR SHRIVASTAVA**

*Assistant Professor*

Department of Botany & Microbiology  
Government D.T.P.G. College, Utai, Durg, CG  
9424110584 (M)  
aksbotany@gmail.com

# Traditional Medicines & NUTRITION

Food, Clothes and house are the three necessity for human, among this Food is the major source for serving the nutritional needs. There has been increased global interest in traditional medicine due to primary and secondary metabolites. Ayurveda, the traditional Indian literature of medicine, remains the most ancient yet living traditions. Increased side effects, lack of curative treatment for several chronic diseases, high cost of new drugs, microbial resistance and emerging, diseases are some reasons for renewed public interest in complementary and alternative medicines (CAM). Numerous nutraceutical combinations have entered the international market through exploration of ethnopharmacological claims made by different traditional practices.

## 1. Introduction

India is known for its traditional medicinal systems—Ayurveda, Siddha, and Unani. The Ayurvedic concept appeared and developed between 2500 and 500 BC in India. The literal meaning of Ayurveda is “science of life,” because ancient Indian system of health care focused on views of man and his illness. It has been pointed out that the positive health means metabolically well-balanced human beings. Ayurveda is also called the “science of longevity” because it offers a complete system to live a long healthy life. It offers programs to rejuvenate the body through diet and nutrition. It teaches the patient to become responsible and self-empowered.

## 2. Medicinal Plants Used in Alternative/Traditional Medicines

Alternative medicines are being used by about 60 percent of the world's population. The Indian subcontinent is a vast repository of medicinal plants that are used in traditional medical treatments. The alternative medicines in the traditional systems are derived from herbs, minerals, and organic matter, while for the preparation of herbal drugs only medicinal plants are used. In India, about 70 percent of rural population depends on the traditional Ayurvedic system of medicine. Most healers/practitioners of the traditional systems of medicine prepare formulations by their own recipes and dispense to the patients.

## 3. Expanding Complementary and Alternative (CAM) Approaches

More than 80 percent of people in developing countries cannot afford the most basic medical procedures, drugs, and vaccines. Among wealthier populations in both developed and developing countries, complementary and alternative practices are popular although proof of their safety and effectiveness is modest. Nowadays people seek CAM techniques because they believe the side effects will be lower. In both developed and developing countries, users of complementary methods also commonly seek conventional care.

## 4. Nutraceuticals an Evolving Alternative Approach

Nutrition is a fundamental need. Various risk factors related to health result from an imbalance in nutrition. These imbalances in India are widely prevalent leading to adverse outcomes. A certain section of the population consumes diet which does not provide sufficient calories, let alone sufficient nutrients. In India, nearly 20% of the total population and 44% of young children (below 5 years of age) are undernourished and underweight. On the other hand, there is a huge population that is nourished in calorie intake but not in terms of nutrient intake.

According to WHO report, India has the largest burden of cardiovascular diseases and largest number of diabetes patients in the world. While the intake of calorie-rich foods may be high, micronutrient-rich foods are being consumed in low proportions. As a result, significant micronutrient deficiencies exist in urban as well as rural areas. The dietary supplements category is expected to be the fastest growing product category globally.

## 5. Herbal Medicines in Dietary Supplements

Dietary supplements and herbal remedies are popular complementary or alternative products for people. These are the supplements that are intended to supplement the diet and contain one or more dietary ingredients (including vitamins, minerals, herbs or other botanicals, amino acids, and other substances) or their constituents. These are intended to be taken by mouth as a pill, capsule, tablet, or liquid and are labeled on the front panel as being a dietary supplement. Such products may range from isolated nutrients, dietary supplements, and diets to genetically engineered “designer” foods, herbal products, and processed foods such as cereals, soups, and beverages. These botanicals are sold in many forms as fresh or dried products, liquid or solid extracts, tablets, capsules, powders, tea bags, and so forth. For example, fresh ginger root is often used in various food stores; dried ginger root is sold packaged in tea bags, capsules, or tablets, and liquid preparations made from ginger root are also sold in the market.

## 6. Nutraceutical Concept with Varying Definition

The nomenclature for nutraceuticals is based on the segments it constitutes. In Canada, this term is natural health products; in USA, it is called dietary supplements, and in Japan it is called foods for special health use. There are distinct definitions and regulations for dietary supplements and functional foods in USA, Canada, and Europe. In Japan, dietary supplements and functional foods are governed under the same set of regulations. USA and Canada actually list the constituents that a product must have to be called a nutraceutical, whereas Europe and Japan just provide general guidelines on the properties that a product should have to be called a nutraceutical.. Traditional medicines though have been excluded from the definition.

## 7. Conclusion

Although some uncertainty exists about the safety, effectiveness, and cost-effectiveness. For example, improving the information and services provided in local pharmacies, that are the primary source of treatment for many ailments in rural areas, might serve as an effective substitute for allowing unregulated use of conventional medical treatment. Also, numerous nutraceutical combinations have entered the international market through exploration of ethnopharmacological claims made by different traditional practices. To truly consume a healthy diet, the vast majority of the diet must be composed of health-promoting foods and nutraceuticals but disease-promoting foods or junk food must be avoided. Ninety percent of the daily diet should be made up of nutrient rich plant foods, whose calories are accompanied by health-promoting phytochemicals, vegetables, fresh fruits, beans and legumes, raw nuts, seeds, and avocados, starchy vegetables, and whole grains. The rich nutrient food intake will provide maximum protection against not only infections, asthma, and allergies but also against heart disease and cancer in adulthood.



# TEXT BOOKS OF ZOOLOGY & BOTANY

(Unified Syllabus of Dept. of Higher Education, Govt. of M.P.)

Text Books written by "Dr. Shivesh Pratap Singh" & "Dr. Rashmi Singh" during 2005 to 2006 with other co authors.



Published by - Akhilesh Gupta, Business Manager for Society of Life Sciences,  
Richa Offset Printers, Satna for free circulation to members of Society of Life Sciences.  
Designed By - Prakash Tripathi +91 9109082003